महाबोधि इंटरनेशनल मेडिटेशन सेंटर, लेह, लद्दाख में बुद्ध जयंती कार्यक्रम में वीडियो संदेश

- आज बुद्ध जयंती के पावन अवसर पर आप सबके साथ भगवान बुद्ध को स्मरण करने, उनकी शिक्षाओं का अनुसरण करने और अपने जीवन में उन्हें उतारने का शुभ अवसर पाकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

- हमारी भारत भूमि अवतारों की भूमि रही है। ऐसे ही एक अवतार भगवान बुद्ध हुए हैं जिन्होंने राजसी वैभव को त्याग दिया। अपने आसपास मौजूद दुख के विभिन्न रूपों को उन्होंने निकट से देखा। फिर जनसाधारण के दुखों का समाधान ढूंढने निकल पड़े। उन्होंने कई वर्षों तक कठोर तपस्या की, सतत साधना की।

- महात्मा बुद्ध ने 528 ईसा पूर्व में वैशाख पूर्णिमा के दिन बोधगया में निरंजना नदी के तट पर एक पीपल वृक्ष के नीचे ध्यान करते हुए आत्म बोध प्राप्त किया।

- उसके बाद का उनका सारा जीवन उस ज्ञान को लोक कल्याण के लिए जन-जन तक पहुंचाने के लिए समर्पित रहा।

- विश्व में कुछ ऐसे महापुरुष रहे हैं जिन्होंने अपने जीवन से समस्त मानव जाति को एक नई राह दिखाई है। उन्हीं में से एक महान विभूति गौतम बुद्ध थे।

- **दुनिया को अपने विचारों से नया मार्ग (मध्यम मार्ग) दिखाने वाले महात्मा बुद्ध भारत के एक महान दार्शनिक, समाज सुधारक और बौद्ध धर्म के संस्थापक थे।**

- भारतीय वैदिक परंपरा में धीरे-धीरे जो कुरीतियाँ पनप गईं थी, उन्हें पहली बार ठोस चुनौती महात्मा बुद्ध ने ही दी थी।

- बुद्ध ने वैदिक परंपरा के कर्मकांडों पर कड़ी चोट की किंतु वेदों और उपनिषदों में विद्यमान दार्शनिक सूक्ष्मताओं को किसी-न-किसी मात्रा में अपने दर्शन में स्थान दिया और इस प्रकार भारतीय सांस्कृतिक विरासत को एक बने-बनाए ढर्रे से हटाकर उसमें नवाचार की गुंजाइश पैदा की।

- मध्यकाल में कबीरदास जैसे क्रांतिकारी विचारक पर महात्मा बुद्ध के विचारों का गहरा प्रभाव दिखता है। डॉ. अंबेडकर ने भी वर्ष 1956 में अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले बौद्ध धर्म अपना लिया था और तर्कों के आधार पर स्पष्ट किया था कि क्यों उन्हें महात्मा बुद्ध शेष धर्म-प्रवर्तकों की तुलना में ज़्यादा लोकतांत्रिक नज़र आते हैं।

- **बुद्ध के दर्शन का सबसे महत्त्वपूर्ण विचार 'आत्म दीपो भवः' अर्थात 'अपने दीपक स्वयं बनो'। इसका तात्पर्य है कि व्यक्ति को अपने जीवन का उद्देश्य या नैतिक-अनैतिक प्रश्न का निर्णय स्वयं करना चाहिये।**

- यह विचार इसलिये महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह ज्ञान और नैतिकता के क्षेत्र में एक छोटे से बुद्धिजीवी वर्ग के एकाधिकार को चुनौती देकर हर व्यक्ति को उसमें प्रविष्ट होने का अवसर प्रदान करता है।
- **बुद्ध के दर्शन का दूसरा प्रमुख विचार 'मध्यम मार्ग' के नाम से जाना जाता है। सूक्ष्म दार्शनिक स्तर पर तो इसका अर्थ कुछ भिन्न है, किंतु लौकिकता के स्तर पर इसका अभिप्राय सिर्फ इतना है कि किसी भी प्रकार के अतिवादी व्यवहार से बचना चाहिये।**
- बुद्ध दर्शन का तीसरा प्रमुख विचार 'करुणा' है। यह करुणा दूसरों के दु:खों को अनुभव करने की क्षमता है। वर्तमान में कोविड संकट के समय में यह सबसे अधिक प्रासंगिक बिंदु है। कोविड 19 जैसी वैश्विक महामारी सदियों में एक बार होती है। किसी भी राष्ट्र के लिए इनका अकेले मुक़ाबला करना अत्यंत कठिन है।
- इस प्रकार की चुनौतियों के लिए देश के सभी लोगों को मिलकर एकजुट होकर संघर्ष करना है और उन प्रोटोकॉल्स का पालन करना है जो स्वास्थ्य विशेषज्ञों द्वारा निर्धारित किए गए हैं।
- **हमें सोशल डिसटेंसिंग मेनटेन करते हुए भी आपस में दिलों में प्रेम और करूणा के उन भावों को महत्व देना है जो मानव का मानवीय गुण है।**
- **हमें इस सत्य को स्वीकार करना होगा कि हम तभी सुरक्षित हैं जब सभी सुरक्षित हैं। तो सभी के लिए मन में करूणा के नैसर्गिक भाव मन में होना बेहद आवश्यक है।**
- **बुद्ध दर्शन का चौथा प्रमुख विचार यह है कि वे परलोकवाद की बजाय इहलोकवाद पर अधिक बल देते हैं।** गौरतलब है कि बुद्ध के समय प्रचलित दर्शनों में चार्वाक के अलावा लगभग सभी दर्शन परलोक पर अधिक ध्यान दे रहे थे। **उनके विचारों का सार यह था कि इहलोक मिथ्या है और परलोक ही वास्तविक सत्य है। इससे निरर्थक कर्मकांडों तथा अनुष्ठानों को बढ़ावा मिलता था।**
- **बुद्ध ने जानबूझकर अधिकांश पारलौकिक धारणाओं को खारिज किया।**
- **बुद्ध दर्शन का पाँचवा प्रमुख विचार यह है कि वे व्यक्ति को अहंकार से मुक्त होने की सलाह देते हैं। अहंकार का अर्थ है 'मैं' की भावना। यह 'मैं' ही अधिकांश झगड़ों की जड़ है। इसलिये व्यक्तित्व पर अहंकार करना एकदम निरर्थक है।**
- बुद्ध दर्शन का छठा प्रमुख विचार हृदय परिवर्तन के विश्वास से संबंधित है। बुद्ध को इस बात पर अत्यधिक विश्वास था कि हर व्यक्ति के भीतर अच्छा बनने की संभावनाएँ होती हैं, ज़रूरी यह है कि उस पर विश्वास किया जाए और उसे समुचित परिस्थितियाँ प्रदान की जाएँ।

- **महात्मा बुद्ध भारतीय विरासत के एक महान विभूति हैं। उन्होंने संपूर्ण मानव सभ्यता को एक नयी राह दिखाई। उनके विचार, उनकी मृत्यु के लगभग 2500 वर्षों के पश्चात् आज भी हमारे समाज के लिये प्रासंगिक बने हुए हैं।**
- वर्तमान समय में बुद्ध के स्व-निर्णय के विचार का महत्त्व बढ़ जाता है दरअसल आज व्यक्ति अपने घर, ऑफिस, कॉलेज आदि जगहों पर अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण फैसले भी स्वयं न लेकर दूसरे की सलाह पर लेता है, अतः वह वस्तु बन जाता है। बुद्ध का 'आत्म दीपो भवः' का सिद्धांत व्यक्ति को व्यक्ति बनने पर बल देता है।
- बुद्ध का मध्यम मार्ग सिद्धांत आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना बुद्ध के समय था। उनके इन विचारों की पुष्टि इस कथन से होती है कि वीणा के तार को उतना नहीं खींचना चाहिये कि वह टूट ही जाए या फिर उतना भी उसे ढीला नहीं छोड़ा जाना चाहिये कि उससे स्वर (ध्वनि) ही न निकले।
- **दरअसल आज दुनिया में तमाम तरह के झगड़े हैं जैसे- सांप्रदायिकता, आतंकवाद, नक्सलवाद, नस्लवाद तथा जातिवाद इत्यादि। इन सारे झगड़ों के मूल में बुनियादी दार्शनिक समस्या यही है कि कोई भी व्यक्ति देश या संस्था अपने दृष्टिकोण से पीछे हटने को तैयार नहीं है।**
- इस दृष्टि से इस्लामिक स्टेट जैसे अतिवादी समूह हो या मॉब लिंचिंग विचारधारा को कट्टर रूप में स्वीकार करने वाला कोई समूह हो या अन्य समूह सभी के साथ मूल समस्या नज़रिये की ही है।
- **महात्मा बुद्ध के मध्यम मार्ग सिद्धांत को स्वीकार करते ही हमारा नैतिक दृष्टिकोण बेहतर हो जाता है। हम यह मानने लगते हैं कि कोई भी चीज का अति होना घातक होता है।**
- **यह विचार हमें विभिन्न दृष्टिकोणों के मेल-मिलाप तथा आम सहमति प्राप्त करने की ओर ले जाता है।**
- **महात्मा बुद्ध का यह विचार कि दुःखों का मूल कारण इच्छाएँ हैं, आज के उपभोक्तावादी समाज के लिये प्रासंगिक प्रतीत होता है। दरअसल प्रत्येक इच्छाओं की संतुष्टि के लिये प्राकृतिक या सामाजिक संसाधनों की आवश्यकता पड़ती है।**
- ऐसे में अगर सभी व्यक्तियों के भीतर इच्छाओं की प्रबलता बढ़ जाए तो प्राकृतिक संसाधन नष्ट होने लगेंगे, साथ ही सामजिक संबंधों में तनाव उत्पन्न हो जाएगा। ऐसे में अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करना समाज और नैतिकता के लिये अनिवार्य हो जाता है।
- **प्रत्येक विचारक की तरह बुद्ध के विचार अनेक बिंदुओं पर आकर्षित करते हैं। महात्मा बुद्ध से जो सीखा जाना चाहिये, वह यह है कि जीवन का सार संतुलन में है, उसे किसी भी अतिवाद के रास्ते पर ले जाना गलत है।**
- हर व्यक्ति के भीतर सृजनात्मक संभावनाएँ होती हैं, इसलिये व्यक्ति को अंधानुकरण करने के बजाय स्वयं अपना रास्ता बनाना चाहिये।

- मैं महाबोधि इंटरनेशनल मेडिटेशन सेंटर, लेह को इस आयोजन के लिए बधाई देना चाहता हूं। आज जब समूचा देश या यूं कहें पूरी मानवता कोविड महामारी का सामना कर रही है उस समय महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं की प्रासंगिकता को लेकर इस वेबिनार का आयोजन किया गया है।
- जब भी हम कभी किसी संकट में होते हैं तो हमारे नैतिक और सांस्कृतिक मूल्य हमारी रक्षा करते हैं और हमारे मन के अंदर यह संबल देते हैं कि हम किसी भी कठिनाई से निपट सकते हैं।
- मुझे पूर्ण विश्वास है कि महात्मा बुद्ध द्वारा दी गई शिक्षाएं लोगों को महामारी से निपटने के लिए मार्गदर्शन करेंगी और हमारे आस-पास नकारात्मकता या भय के वातावरण को दूर कर नई आशा और उत्साह का संचार करेगी।
- **इस नई ऊर्जा, नए उत्साह को हम किस प्रकार बनाए रख सकते हैं, इसके बारे में भी ये मूल्य हमें पथ प्रदर्शन प्रदान करेंगे।**
- एक बार पुनः मैं आयोजकों को इस वेबिनार के लिए अपनी ओर से बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। **'बुद्धम शरणम् गच्छामि। धम्मम् शरणम गच्छामि।' जय हिंद।**